बुरी आदते और आत्महत्या
Bad Habits and Suicide

मेरा नाम ओ_____ हैं. मैं भारत के ..... छोटे से गाँव में रहता हूँ. मेरे दादा और दादी और नाना सब लोग अपने बचपन से ही भगवान् शिव, राम और कृष्ण के भक्त रह चुके हैं. मुझे बचपन से मेरे माता पिता ने सिखाया की मैं नियमित रूप से मंदिर जाऊं और पूजा करूँ, और मुझे गाँव के हर गतिविधियों में नियमति रूप से उपस्थित होना था.

जब मैं बड़ा हुआ तो मैं नियमित रूप से इन सारी चीजो में भाग लेता रहा. मैं कई तीर्थ यात्रा पर गया और कई हिन्दू शास्त्र भी पढ़ा लेकिन अपने जीवन में मैंने जो अनुभव किया हैं, जैसे मैंने ग्रामीण जीवन व्यतीत करना आरम्भ किया- कई बुरी आदतों ने मेरे निजी जीवन में प्रवेश किया. इन बुरी आदतों और बुरी चीजों की वजह से मेरा जीवन वास्तव में दुखद हो गया और मेरे जीवन में कोई शांति नहीं थी. मेरे जीवन में कोई ख़ुशी भी नहीं थी. मुझे बचपन से सिखाया गया था की हमें अच्छे कर्म करने चाहिए और अच्छे कर्म करने से ही हमें मोक्ष मिलेगा और पुनर्जन्म में अच्छी स्थिति में पैदा होंगे. मैं अपने जीवन में अच्छे कर्म करना चाहता था- लेकिन मैं नहीं कर रहा था, लेकिन मैं जो बुरे कर्म कर रहा था उन्हें मैं करना नहीं चाह रहा था, उन्हें मैं स्वचालित रूप से कर रहा था. खैर मेरे जीवन में शांति बिल्कुल न थी. मेरे परिवार में कोई शांति न थी. बुरी आदतों की वजह से मुझे गंभीर सर दर्द होता था, और मेरी अश्लीलता और बुरी आदतों की वजह से मेरे पुरे शरीर में दर्द भी होता था. मैं वास्तव में एक दयनीय जीवन जी रहा था. कई बार मैं सोंचता था, 'मैं अपनी ज़िन्दगी ख़त्म कर दूंगा, मैं आत्महत्या कर लूँगा और इन सारी दुःख तकलीफ और चिंताओं से मुझे मुक्ति मिल जायेगी.

दिसंबर १९८५ के एक दिन, मैं एक _____ से गुजर रहा था और उस समय मैं लगातार इस सोंच में था की मैं आत्महत्या कैसे कर सकता हूँ. मैं आत्महत्या करने की योजना बना रहा था की मैंने अपने रास्ते पर एक व्यक्ति को यीशु मसीह के बारें में बताते हुए सुना. तो मैं वहीं रुक गया, उस व्यक्ति से बात की और यीशु मसीह के बारें में पूंछा. उस व्यक्ति ने मुझे परमेश्वर के प्रेम के बारें में बताया. उसने मुझसे कहा कि "यीशु मसीह हर एक से अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा प्रेम करता हैं" और इस रीति से उसने मुझे यीशु मसीह के बारें में विस्तार से समझाया. उसने मुझसे यह भी कहा, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपने इकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनंत जीवन पाए". उस समय मुझे उसकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ.

मैं सोंचने लगा, 'यह लोग, विदेशियों कि सहायता से आम जनता का धम्र परिवर्तन कर रहे हैं, हमारा धर्म ही अच्छा हैं और मुझे उसी में टिके रहना हैं'. उस व्यक्ति ने मुझे एक नया नियम दिया और उनकी आराधना सभा में भाग लेने को आमंत्रित किया. तब मैं घर वापस आया और उस नए नियम का मत्ती कि पुस्तक का पहला अध्याय खोला. जैसे मैं पढने लगा परमेश्वर ने मैं जो पढ़ रहा था उसमे से ही मुझसे बातें कि. जब मैंने परमेश्वर का वचन पढ़ा तब मुझे पता चला कि मैं पापी हूँ, और प्रभु यीशु मसीह इस पृथ्वी पर पापियों को बचाने के लिए आये थे. मैंने पढ़ा था कि प्रभु यीशु मसीह ने मेरे पापों के छुटकारा के लिए अपनी जान दी हैं. उन्होंने मेरे लिए क्रूस पर जान दिया था. वही केवल मुझे उद्धार दे सकते हैं और मुझे लगता हैं कि यीशु मसीह ही मेरे पापों को क्षमा कर सकते हैं, और मुझे यीशु मसीह जैसे उद्धारकर्ता कि ही जरूरत हैं. परमेश्वर के वचन के द्वारा मुझे लगा कि यीशु का लहू मेरे सारे पापों से शुद्ध कर सकता हैं. मैं जानता था कि प्रभु यीशु मसीह मेरे लिए मरे, गाड़े गए और तीसरे दिन फिर मेरे लिए जी उठे. ऐसा लिखा हैं कि यदि तुम प्रभु यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करोगे तब वह तुम्हे बचाएगा और एक नया जीवन भी देगा.

यह ३१ मार्च, १९८६ कि बात हैं जब मैंने प्रभु यीशु मसीह को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया. उस समय मैं अपने सारे पापों को प्रभु के सम्मुख स्वीकार कर रहा था और उनसे प्रार्थना कर रहा था, "प्रभु यीशु आप मेरे दिल में आईये मेरे जीवन में आईये, मैं आपको अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करना चाहता हूँ, मैं अपना जीवन आपके हाथों में समर्पण करना चाहता हूँ". उस समय मैंने परमेश्वर कि उपस्थिति का अनुभव किया और मुझे अचानक से यह एहसास हुआ जैसे पाप का भारी भोज जो मेरे ऊपर था वह अचानक से लुढक गया हो और मैं बहुत हल्का और सामान्य महसूस करने लगा- मेरा ह्रदय शांति और ख़ुशी से भर गया. तब मेरे जीवन से सारी बुरी आदते दूर हो गयीं और उस दिन से मेरा पूरा जीवन बदल गया और मैं एक नया इंसान बन गया.

जब मेरे परिवार के सदस्यों ने मेरा यह परिवर्तन देखा और जब उन्होंने ध्यान दिया कि मैं इसाई धर्म के प्रति सकारात्मक हूँ तो उन्होंने मेरे जीवन में उत्पीड़ना शुरू कि. उन्होंने तुरंत मेरी शादी एक हिन्दू लड़की से तय कर दी. लेकिन फिर मेरी पत्नी ने भी प्रभु यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार कर एक असली इसाई बन गयी. परमेश्वर ने बड़ी ही शक्तिशाली रूप से उसके जीवन में कार्य किया.

जब मेरी पत्नी ने प्रभु यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया, मेरे पिता ने मुझे और मेरी पत्नी को धक्के मार कर हमारे घर से बाहर निकाल दिया. लेकिन मैंने परमेश्वर के वचन से सीखा था कि मुझे परमेश्वर कि आज्ञा का पालन करना था और अपने जीवन

में दिए गए सारे प्रतिज्ञाओं और आशीषों पर भरोसा रखना हैं. अभी हम, मैं और मेरी पत्नी, हम अलग रहने लगे और अपने माता पिता और भाई बहनों के लिए प्रार्थना करने लगे. और परमेश्वर ने उनके जीवन में कार्य किया और एक के बाद एक सबने प्रभु यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकरता के रूप में स्वीकार किया. तब परमेश्वर ने हमें दो बच्चों से आशीष दी और हमारे व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन को अत्यधिक आशीषित किया.

व्यक्तिगत रूप से मैं जानता हूँ कि यीशु मसीह वास्तव में अच्छा हैं और मैं यह भी जानता हूँ कि मुझे यह मुक्ति और उद्धार मेरे किसी अच्छे चीजो के कारण नहीं मिला बल्कि केवल परमेश्वर कि करुणा से मिला हैं. अच्छे कार्य नहीं बल्कि यीशु का लहू मुझे शुद्ध करता हैं और मैं एक नया इंसान बना हूँ, यीशु मसीह में मुझे एक नया जीवन मिला हैं.

परमेश्वर का वचन कहता हैं, जो यीशु में हैं वह एक नयी सृष्टि हैं, पुराणी बातें गयी अब सब कुछ नया हो गया हैं.